राधास्वामी संत संदेश

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 6 अंक : 74 15 जून 2003

सदस्यता शुल्क : ——— भारत, नेपाल व सिक्किम में

वार्षिक : 40/- एक प्रतिः 5/-

इस अंक में

1.	बड़े महाराज संत ताराचन्द जी द्वारा फर्माया सत्संग	2
2.	ध्यानाकर्षण बिन्दू व सूचना	28
3.	सेवा का अंग (महर्षि शिवव्रत लाल जी)	30
4.	अनमोल वचन	31
5.	ज्ञान-सार	31
6.	स्वास्थ्य स्तम्भ (औषधि प्रयोग)	32
7.	सत्संग सार	33
8.	सतगुरु कृपा	35

राजीव कुमार लोहिया, मुद्रक एवं प्रकाशक द्वारा अपने स्वामित्व में राधास्वामी सत्संग प्रेस हालू बाजार, भिवानी से मुद्रित तथा कार्यालय, हालू बाजार, भिवानी से प्रकाशित

फोन नं. : 01664-241570 (भिवानी आश्रम)
01664-285094 (दिनोद आश्रम)

वेबसाइटः- www.radhaswamidinod.org

इ-मेलः- info@radhaswamidinod.org

बड़े महाराज संत ताराचन्द जी द्वारा फर्माया सत्संग

भिवानी कैसेट क्रमांक..... 83

दिनांक 4.7.92

समय .....रात्रि

देखो सब जग जात बहा.....।
देख-देख मैं गति या जग की बार-बार यों वर्ण कहा।।
चारों जुग चौरासी भोगी अति दुख पाया नर्क रहा।
जन्म–जन्म दुख पावत बीते एक छिन कहीं न चैन लहा।।
पाप पुण्य बस विपता भोगी नहीं सतगुरू का चरण गहा।।
अब ये देह मिली क पा से करो भक्ति जो कर्म दहा।
अब की चूक माफ नहीं होगी, नाना विधि के कष्ट सहा।।
गफलत छोड़ भुलाओ जग को नाम अमल अब घोट पिया।
मन से डरो करो गुरू सेवा, राधास्वामी भेद दिया।।

राधास्वामी! राधास्वामी दयाल की दया !!

राधास्वामी सहाय !!! राधास्वामी !

प्रेमियो, सत्संगियो, माताओ और बहनों! यह स्वामी जी महाराज की वाणी है। स्वामी जी महाराज ने बहुत टेढ़ी, बहुत सरल, बहुत हौंसले की, बहुत पवित्र बातें कही हैं–

देखो सब जग जात बहा।

जग अलग है और युग अलग चीज है। एक नहीं चारों ही युग बहे जा रहे हैं। कहते हैं कि यह सारा ही जग बहा जा रहा है। मैं तो यहां तक कहूंगा कि चारों ही युग बहते चले गए। जिसने संतमत की बातें नहीं समझी और उस लाइन पर नहीं चले, उसके अनुसार काम नहीं किया उनके लिए सारा ही युग बह गया।

स्वामी जी ने कहा है–

देखो सब जग जात बहा।

अर्थात् सारा ही जग बहा जा रहा है। ये बातें मैंने पहले भी कही थीं। आज भी कोई यह प्रश्न कर सकता है–जग कैसे बह रहा है और युग कैसे बह रहा है? पहले मैं युगों की बातें बताऊंगा। फिर जग तो सारा ही बैठा है। जो वक्त चल रहा है, यही जग है। यह तो बहा जा रहा है। पर चारों युग भी बह गये हैं। मैं छोटा था तो एक शब्द सुना करता था–

हर हर कहना, सब की सहना तनिक जीव है काचा।
नाम नारायण का साचा, नाम पनमेश्वर का साचा।।

उस परमात्मा के नाम को तो हम भूले बैठे हैं। मेरे पास आज आश्रम में एक प्रेमी बैठा हुआ था। उसने कहा–हम एक बात पूछ लें। मैंने कहा–पूछिए। जब मैं संतमत में गया तो एक प्रण किया था कि मैं किसी की निंदा नहीं करूंगा। प्रेमियो! मैंने बड़ी आरतियां उतारी। बड़ी मालाएं फेरी, पूजा करी। उन बातों के बारे में क्या कहूं? बहुत ही महात्माओं के पास गया पर मैंने किसी की निंदा नहीं की। देवी देवता भी बहुत पूजे। पर जब सतगुरू की शरण मिल जाती है, फिर किसी भी चीज की जरूरत नहीं रहती।

कनाडा में हमारा सत्संग था। एक प्रेमी मेरे पास आकर बहुत रोया। मैंने कहा–क्या बात हुई? उसने कहा–मैं गिर गया जी। मैंने पूछा–किस तरह? उसने कहा–मैंने दुर्गा भवानी और लक्ष्मी की बड़ी पूजा की। मैं दुर्गा के फोटो की धौंक मारता हूं। मैंने कहा–फिर क्या बात हुई? मैं भी मारा करता था। ऐसा है कोई जो धोक न मारता हो? पर धौंक धौंक में फर्क है। क्या फर्क है? वही हवा माघ महीने में चलती है, वही ज्येष्ठ मास में चलती है।

वही ब्यार जेठ में चाले, वही ब्यार माह में।
वही गाली घर उजाड़े, और वही गाली है ब्याह में।।

प्रेमी! यह तो कुछ भी बात नहीं है। यह बता तूने किस प्रकार से पूजा की? यह भी बता क्या तू सुखी है? पूजा तो एक ही होती है। मैंने सभी की पूजा की है। किसी को भी नहीं छोड़ा। जब मुझे होश आया तो पता चला कि न तो उसे मेरे बाप ने देखा और न ही मेरे दादा ने देखा था। जब उसको किसी ने भी नहीं देखा तो उसकी पूजा करके हम क्या लेंगे? अगर यह कहते हो कि हम इसलिए ही पूजा करते हैं कि उन्होंने हमें समझा दिया है तो फिर उसकी टाल भी कोई नहीं करता और न कोई उसकी निंदा ही करता है। लक्ष्मी की पूजा सभी करते है। वे तो बावले हैं। लक्ष्मी की पूजा क्यों करते हो? लक्ष्मी के खाविंद की पूजा करो। जब पति आ जाएगा तो पत्नी कहां रह जाएगी? लक्ष्मी का मालिक कौन है? उसका मालिक भगवान विष्णु है, उसकी पूजा करो। लक्ष्मी अपने आप ही आ जाएगी। फिर आपने कौन सा जुल्म किया? उसने कहा–मैंने अपने घर में दुर्गा भवानी का फोटो लगा कर उसकी आरती उतारी और पूजा की। उस दिन के बाद से न मेरा भजन बनता है और न ही मुझे शान्ति है। इसलिए मैं परेशान हूं। मैंने कहा–एक बात बताऊं। उसने कहा–बताओ जी। मैंने कहा–तू खूब पूजा किया कर। खूब आरतियां उतारा कर। पर अपने दिल में ख्याल ऊंचा रखा कर। जब तेरा ख्याल ऊंचा होगा और उन देवी देवताओं की लाइन से ऊंचा चला जाएगा, तो वही बात है। बच्चे के एक हाथ में कोड़ियां हैं तो उसकी दूसरी मुट्ठी हीरे मोतियों से भर दो, फिर कोड़ियों वाली मुट्ठी अपने आप ही ढ़ीली हो जाएगी। जब तू इनकी हद से आगे चला जाएगा तो अपने आप ही ढ़ीला हो जाएगा। तू कहीं नहीं गया है। ऐसे तो तूने अपने आप के बारे में बता दिया है कि मैं यहीं रह गया हूं और इस काल के चक्कर में हूं। जब तू आगे चला जाएगा तो आप ही आप तेरा काम सुधर जाएगा। तू खूद पूजा किया कर पर आगे का

निशाना रखा कर। वहां ठहरने की कोशिश मत करो। बाहर की पूजा में मत फसों। बाहर की भक्ति में फंस जाओगे तो उसी में चक्कर काटते रहोगे। संतों के सेवक भी कर्म कांडी बन जाते हैं।

मैं थोड़ी सी बातें सत्संगियों के लिए कहता हूं कि जो नाम लेकर थोड़े से प्रकाश में और थोड़ी सी जगह मिलते ही ठहर जाते हैं, वे उसी आनन्द में रह जाते हैं। वे कर्मकांडी बन जाते हैं। फिर वे कभी भी आगे नहीं जाते हैं। मैं आप लोगों को सत्संग बताता हूं। वे इसीलिए आगे नहीं जाएंगे क्योंकि वे कर्म कांडी बन गए। उसी एक स्थान को देखकर खड़े हो जाते हैं। उस जगह पर मत अटको। आगे चलने की कोशिश करो। आप कहोगे—आगे कैसे चलें? अपनी व ति को ऊपर की तरफ खींचते रहो। व ति नहीं समझते हो। अपने विचारों को ऊपर करते रहो। अगर इसे भी नहीं समझते तो ऐसा विचार बना लो कि अपने ही विचार से अपने अंतर की कोई धुनी बना लो। वह धुनी ही उस धुनी को पकड़ लेगी। फिर एक दिन अपने घर (अपने लक्ष्य) पर पहुंच जाओगे। जो अपने लक्ष्य को छोड़ देता है, वह गिर जाता है। लक्ष्य तो हमारा राधास्वामी धाम का है और हम अटक गए लक्ष्मी या दुर्गा या देवी—देवताओं में, फिर तो वहीं रह जाओगे। उनका फायदा तो जरूर ही मिलेगा पर जो तुमने निशाना लिया है वहां तो कभी नहीं पहुंचोगे। संतमत तो यही बताता है कि जहां का निशाना लिया है, वहीं पहुंचना है। उसी घर में पहुंचना है। जिन्होंने अपना निशाना ले रखा है और उनको घर पहुंचने की इच्छा है, वे भागी हैं। ऐसे भागी अपना जीवन सफल कर जाते हैं। वे अपने दोनों ही दीन बना जाते हैं, जगत भी और अगत भी। जो आदमी का चोला मिलने पर भी छोटी—छोटी बातों में फंस जाते हैं, वे दोनों दीनों से खो जाते हैं। जैसे—

दोनों दीन से गया पांडे, हलवा मिला न मांडे।

बाबा जी मिसाल दिया करते थे—

कनपाड़ा रे कनपाड़ा, तूने दोनों दीन बिगाड़ा।

कनपाड़ा एक दर्शनी साधु होता है। उसके दर्शन करने से पाप कटते हैं पर वह अपना दीन भी बिगाड़ लेता है। कैसे? वह विषयी—विकारी हो जाता है। भोगी बन जाता है। फिर उसका मुंह देखने वाला भी नर्क का अधिकारी बन जाता है। इसी तरह अगर पंडित होकर लालची हो जाता है, तो वह एक जल्लाद माना जाता है। वह लालच में पड़कर जल्लाद हो जाता है। इसलिए वह सत्संगी भी नहीं रहता है। सत्संगी भी वही होता है जो अपने विचारों को ऊंचे रखता है। शांति से अपना काम करता रहता है। अपना निशाना लगाए रहता है। दूसरा निशाना लगाया और तत्काल काम बिगड़ा। निशाना अगर लगा रहा तो काम बन गया। निशाना डिग गया तो काम भी डिग गया। निशाना कौन सा? यही तो निशाना था जिससे अर्जुन ने मछली को बींधा था। वह उसका शिवनेत्र का निशाना था। यह वही निशाना था जिसके द्वारा रामचन्द्र जी ने शिव धनुष तोड़ा था। वह कौन सा धनुष था? जो शिव नेत्र को खोल कर आगे गया था। इन बातों का निशाना लेकर जो आगे चलता है वह अपने जग को बना लेता है। वह इस संसार में बाजी को जीत जाता है। अगर तुम इसको समझ गए, तो संसार सार है और नहीं समझे तो असार है। यह नर्क में ले जाती है। इसलिए इसको समझना जरूरी है। बातें चली थी—

देखो सब जग जात बहा।

सारा ही जग बहा जा रहा है। कैसे? कोई किसी की पूजा में और कोई किसी की पूजा में फसा हुआ है। हमने उस कुल मालिक, रमे हुए राम की, उस धुनात्मक नाम की, उस अकाल पुरुष की, उस वाहे गुरू व राधास्वामी की या जो सारी दुनिया का कर्ता है, उस पूर्ण पुरूष की पूजा तो छोड़ दी और दूसरी पूजाओं

में फंस कर अपना सारा ही काम ढ़ीला कर दिया है।

देख–देख मैं गति या जग की।

मैं बार–बार ये कहता हूं–चेतो! पर सभी के सभी रह जाते हैं। आप लोग प्रश्न कर सकते हो–महाराज! आप क्या कहते हो? हम तो बड़े–बड़े सत्संग देखते हैं, सत्संग का बड़ा भारी प्रचार है फिर भी देश उसी तरह ही बिगड़ता जा रहा है।

प्रेमियों, माताओ और बहनों! वह तुम्हारा दोष नहीं है। अगर देश बिगड़ता जा रहा है तो इसमें इन गुरूओं का दोष है। इन गुरूओं ने न्यारे–न्यारे जत्थे बना लिए हैं। इन्होंने अपने पेट के लिए एक रोजगार बना लिया। यदि कोई संतमत को एक बार समझ जाए तो सारे ही देश में इतनी शांति आ जाए कि कोई उसका वर्णन नहीं कर सकता। राधास्वामी वाले भी अपने–अपने जत्थे बनाए बैठे हैं। एक कहता है कि मौज मेरे पास है। दूसरा कहता है कि मौज मेरे पास है। मैं सीधी मिशालें देता हूं कि इन लोगों ने क्या किया? अपने पेट के लिए डेरे और धाम बना लिए। अपने पेट के लिए पार्टियां बना ली। अपने पेट के लिए न्यारे–न्यारे जत्थे बनाए और शिक्षा क्या दी? यही कि दूसरे के सत्संग में जाना महापाप है। अगर मेरे मुंह से ये बातें सुन लो कि दूसरे के सत्संग में जाओगे तो पाप लगेगा, तो ऐ सत्संगियो! मेरे मुंह को न देखना। मैं कभी ऐसी बातें नहीं कहता। मैं कहता कि तुम कहीं भी, किसी के भी सत्संग में जाओ। चाहे कथा और भागवत सुनो पर अपने विचारों को पवित्र रखो। अपना निशाना राधास्वामी धाम का रखो। अपना निशाना अनामी धाम का रखो। अपना निशाना अकाल पुरुष का, राम का रखो। कौन से राम का? उस राम का जो सारी दुनिया की जान है, जो सभी का कर्ता है। वह सब कुछ कर्ता पुरुष ही है। एक दिन तुम खुद ही शांति के पुतले बन जाओगे। पर आप देखते हो कि सत्संगियो के विरोध चलते हैं।

कहते हैं हमारा गुरू बड़ा, तुम्हारा गुरू छोटा। ऐसे शोर शराबे होते रहते हैं। ये सत्संगियो के काम नहीं होते। सत्संग तो सत्संग ही होता है।

सो सारा जग ही बहा जा रहा है। अब किस–किस की क्या–क्या दशा बताई जाए? युगों की बातें कहना चाहता था। पहले के सभी युग ही बहते आए। आप कहोगे–कौन सा बहा? मैं कहता हूं कि सतयुग भी बह गया। सतयुग में बहुत से आदमी अच्छे भी हुए और अवतार भी हुए। सतयुग में बड़ा भारी धर्म पुण्य भी था। सतयुग में राक्षस भी थे। सतयुग का मैल उतारने के लिए, उस वक्त उसे दूर करने के लिए संतों ने विवेक निकाला। पर उस विवेक से सबके सब तो अपने घर नहीं पहुंचे। काफी लोग रह गए।

देख–देख मैं गति या जग की।

जग की ही नहीं मैंने आपको सतयुग की बात भी बता दी। फिर त्रेता युग आया। उसमें भी ऐसा ही हाल हुआ। अवतार भी आए, काम भी बहुत किया, धोखा भी किया और भी काम किये पर उनकी क्या दशा हुई? उस वक्त आत्मा पर विक्षेप पड़ा हुआ था। उस विक्षेप को दूर करने के लिए अष्टांग योग निकाला। फिर भी बहुत लोग रह गए। फिर द्वापर युग आया। द्वापर में मल ने आत्मा पर पर्दा डाल कर इसे ढ़क लिया। इसने इतना भारी पर्दा डाल लिया कि मल हट नहीं सका। उस पर्दे को हटाने के लिए संतों ने धर्म पुण्य बनाए। तीर्थ व्रत बना दिए। इस तरह लोग इन चीजों में लगा लिए। अब उन्हीं तीनों युगों के ऋषि–मुनियों ने, हमारे बुजुर्गों ने इस कलयुग के आने पर इन तीनों–मल, विक्षेप, आवरण को दूर करने के लिये नाम का सहारा लिया। उस नाम का सहारा कैसे लिया? इशारा तो तुलसी दास जी ने रामायण में भी किया। भागवत में और महाभारत में भी मिलता है। रामायण कहती है–

कलजुग केवल नाम आधारा।
सुमर–सुमर नर उतरहिं पारा।।

और भी कहते हैं–

कलयुग कर्म धर्म नहीं कोई।
नाम बिना उद्धार न होई।।
नाम लिया जिन सब किया सकल वेद का भेद।
बिना नाम नर्कों गए पढ़ते चारों वेद।।

यह तुम्हारे पास वेदों का लक्ष्य भी आ गया। परसुराम जी की भी साख आती है–

नाम लिया जिन सब किया योग यज्ञ आचार।
जप तप तीर्थ परस राम सभी नाम की लार।।
नाम भजन्ता कुष्ठी भला, चूई–चूई पड़े जो चाम।
कंचन देह किस काम की, जा मुख नहीं विराजै राम।।
राम भजन्ती कन्या भली, साकिट भला न पूत।
छेरी के गल गलथना, जा में दूध न मूत।।

अब कलयुग में नाम का ही सहारा है। महाराज चरण दास जी ने भी नाम का बड़ा भारी वर्णन किया है–

नारी हत्या, बालक हत्या, ब्रह्म हत्या जो हो।
एक बार मुख से नाम निकसे सब पातक डारै धो।

कबीर साहब भी यही कहते है–

नाम रती एक है, पाप रती हजार।
रंचक घट में संचरै, जार करै सब छार।

अर्थात् सारे ही पापों को स्वाह कर देता है।

राम नाम के लेते ही, होत पाप का नाश।
ज्यों चिंगारी आग की, पड़ै पुरानी घास।।

कलयुग में एक नाम को ही रखा है। नाम तो सारी दुनिया ही लेती है। कोई किसी गुरू के पास से और कोई किसी गुरू के

पास से। अगर एक भी आदमी उस असली नाम को ले ले, तो वह करोड़ों का उद्धार कर सकता है। वह धुनात्मक नाम है। सभी नाम लिए हुए हैं। वे परस्पर विरोध करते हैं। दूसरे गुरूओं का विरोध करते हैं। दूसरे महात्माओं से विरोध करते हैं। अगर विरोध ही करते हो तो नास्तिकों से करो, आस्तिकों से नहीं। नास्तिकों से भी केवल उनको रास्ते पर लाने के लिये ही। उनके विरोधी मत बनो। नास्तिक किसे कहते हैं? जो शराब पीता है, मांस खाता है, अंडे खाता है, पराई औरतों के पास जाता है और घटिया काम करता है उसको नास्तिक कहा जाता है। उसको शूद्र कहा जाता है। तुम हरिजन भाईयों को शूद्र कहते हो तो वे शूद्र नहीं है। हमारे पूर्वजों ने पहले यही कहा था कि शूद्र को कभी शास्त्र नहीं सुनाना चाहिए। हम भी कहते हैं कि शूद्र को कभी भी नाम नहीं देना चाहिए। यदि जाति का तो ब्राह्मण है पर शराब पीता है, मांस खाता है, पराई स्त्रियों के पास जाता है, खोटे कर्म करता है और झूठी गवाहियां देता है तो वह सब से बड़ा पापी है और सबसे बड़ा गिरा हुआ शूद्र है। लेकिन जो जाति का भील है, जाति का भंगी है पर वह परमात्मा की बंदगी करता है और उसके विचार ऊंचे हैं, पवित्र हैं, वह ऊंचे से ऊंचा ब्राह्मण है। जो ब्रह्म को पहचान लेता है उसी को तो ब्राह्मण कहा जाता है। इसीलिए तो सारा जग बहा जा रहा है। अगर कोई समझाने वाला आता है तो उसी के खून के प्यासे बन जाते हैं। कितने ही ऋषियों महात्माओं के साथ क्या–क्या व्यवहार किया गया? समाज सुधारक महर्षि दयानन्द जी आए उनके भी हम खून के प्यासे बन गए। देश को आजाद कराने वाले महात्मा गांधी जी आये, उनके भी हम खून के प्यासे बन गए। संतों की तो बातें ही क्या हैं? कितने ही संतों की बात कही जाएं। किसी को सूली पर चढ़ा दिया। किसी का सिर कटवा दिया। किसी को पानी में डलवा दिया। किसी को उबलते तेल में

गिरवा दिया। रोजगारी लोगों ने उनके साथ ऐसा सब कुछ किया। वही रोजगार आज इन संतों में भी आ धंसा। जो कोई आदमी निःपक्ष होता है वही निःपक्ष बात कहता है। इस ससांर की गति देख–देखकर घबराहट होती है। अब चारों युगों के जीवों का उद्धार होने का समय आया है। इस कलयुग में, स्वामी जी महाराज ने खुद ही कहा है कि जगत उद्धार होता अब नजर आ रहा है। सारे ही देश का उद्धार होता नजर आ रहा है। किस तरह नजर आया? संत मत प्यार सिखाता है। संतमत योग, जप, तप, पूजा, पाठ, हवन और यज्ञ नहीं सिखाता। सोचो! जब तुम प्यार ही नहीं कर सकते, तो क्या उस घर में पहुंच जाओगे?

महाराज जी एक मिशाल दिया करते थे। उनके पास एक प्रेमी आया। उसने कहा–महाराज! नाम दे दो। उन्होंने कहा–आप को नाम दे देंगे। पहले आप यह बताओ–आप को अपने घर से कितना प्यार है? उसने कहा–मैं तो विरक्त हूं। मेरा किसी से भी प्यार नहीं है। उन्होंने पूछा–क्या अपनी मां से प्यार नहीं है? उसने कहा–मेरी कोई भी मां नहीं है। सभी को मैंने त्याग दिया। महाराज जी ने पूछा–क्या तुम्हें बाप से प्यार है? उसने कहा–नहीं! मैं बाप से भी प्यार नहीं करता। मैंने बाप से भी नाता तोड़ दिया है। मेरा तो किसी से प्यार नहीं है। उन्होंने पूछा–क्या तुम्हें अपने बच्चों से प्यार है? उसने कहा–मेरा बच्चों से भी प्यार नहीं है। उन्होंने पूछा–क्या धर्मपत्नी से प्यार है? वह तो आधे अंग की साझीदार है। उसने कहा–उससे भी मेरा प्यार नहीं है। मैंने तो उससे भी नाता तोड़ दिया है। महाराज जी ने पूछा–क्या तुम्हें परिवार और जमीन जायदाद और घर से प्यार नहीं है। उसने कहा–मेरा तो किसी से भी प्यार नहीं है। मैं तो एक दम अकेला हो गया हूं। महाराज जी ने कहा–मेहरबान! तू अपने घर चला जा। फिर तू हमारा क्या करेगा? हम तो प्रेम ही सिखाते हैं। प्रेम

तेरे पास है ही नहीं। अगर तू अपने घर नहीं जाता है तो फिर कहीं और चला जा। मेरे पास वह वस्तु नहीं है। अरे भाई! जो सन्यासी होते हैं, वे भी प्यार करते हैं। ब्राह्मण होते हैं, वे भी प्यार करते हैं। भजन करते हैं, वे भी प्यार करते हैं पर उस प्यार को तो सारे ही भूल गए हैं। अगर हम अपनी मां को, बाप को ही दुत्कार देते हैं, तो हम अपनी आत्मा से भी प्यार नहीं कर सकते। हम आत्मा के दुश्मन बन जाते हैं। सन्यासी होते हैं, वे अपनी आत्मा से प्यार करते हैं। वे झूठ नहीं बोलते, गंदी चीज नहीं खाते, चोरी बदमाशी नहीं करते। वे यह भी कहते हैं कि अगर हमने अपनी आत्मा से ही प्यार नहीं किया तो हम नर्कों में चले जाएंगे। अगर हमने किसी से धोखा किया, चोरी की, बदमाशी की तो हम खुद ही अपनी आत्मा पर तलवार चलाते हैं।

सत्संगियो! सोचो, मैं क्या कहता हूं? ऐसा कौन है जो अपनी आत्मा पर रहम करता है? उस पर दया करता है। कोई बिरला ही होगा। जो रात और दिन संतों के द्वार पर रहते हैं वे भी अपनी आत्मा का भला नहीं चाहते। क्यों? क्योंकि कोई लालच में मर जाता है, कोई चोरी कर लेता है, कोई अहंकार में मर जाता है, कोई मान बड़ाई में मर जाता है। वे सारे के सारे ही मर जाते हैं। जो अपनी आत्मा से प्यार करता है। वही उसे सतखण्ड में ले जा सकता है। वह अपनी आत्मा को कहता है कि तू छोटी सी बन जा। तुझे बड़ा बनने की जरूरत नहीं। उस आत्मा को वे मलिन नहीं होने देते। पवित्र रखते हैं। कितना पवित्र रखते हैं? महात्मा भावानन्द जी का एक दोहा है–

अन्न शुद्ध खाओगे तो मन भी शुद्ध हो जाएगा।
अन्न अशुद्ध खाओगे तो मन भी अशुद्ध हो जाएगा।।

मन शुद्ध हो गया तो तुम्हारी आत्मा निर्मल होकर सतखण्ड में चली जाएगी। जिसका तार ढीला है उसकी पतंग ऊपर की

तरफ नहीं उड़ेगी। ज्यों—ज्यों तार को खींचते चले जाओगे ज्यों—त्यों पतंग चढ़ती चली जाएगी। यदि अपने विचारों को ढीला छोड़ोगे तो गिर जाओगे। अपने विचारों को खींचे रखो और खींचते जाओ। तुम्हारी सुरत अपनी मर्जी से ऊपर चढ़ जाएगी। तुम्हारी मदद न तो बेटों ने ही करनी है और न जंवाइयों ने ही करनी है। न ही तुम्हारे साथियों ने करनी है। तुम्हारी मदद तुम्हारे कर्मों ने करनी है। सो अपने विचारों को इतना पवित्र रखो कि वे कभी भी मैले न होने पाएं। हर वक्त उनको खींचे रखो। कैसे खींचे रखोगे? खींचना यही है कि तुम्हारे विचार विषयों की तरफ चलते हैं तो उनकी डोरी को खींच लो। अगर तुम्हारे विचार बढ़िया खाने की तरफ चलते हैं तो डोरी को खींच लो। अगर तुम्हारे विचार किसी को देखने के लिए चलते हैं तो डोरी को खींच लो। तुम समझ गए होगे। इन डोरियों को खींचोगे तो खींचते ही आत्मा एक दम ऊपर चढ़ जाएगी। आत्मा पतंग है, इसके साथ विषय विकारों की डोरियां हैं। इन डोरियों को ढ़ील दे दोगे तो आत्मा धड़ाम से नीचे गिर जाएगी। अगर इनको खींच लोगे तो इनके तार खिंचते ही पतंग शिखर में चढ़ जाएगी।

सो मैं बता रहा था सारा ही जग बहा जा रहा है। किस में बहा जा रहा है? काम में, क्रोध में, लोभ, मोह, अहंकार और विषय—विकारों में। दूसरी किस चीज में बहा जा रहा है? हम अपने मुर्शद को छोड़ कर छोटी—छोटी चीजों में फंसे जा रहे हैं। सोचो! एक बादशाह की औरत एक गिरे हुए घर में जाकर अपना पेशा करती है उससे अधिक गिरा हुआ कौन है? जो एक शहनशाह सतगुरू के शिष्य होकर नीचे गिरते हैं इससे बड़ा पाप क्या करोगे?

मेरे सत्संगियों! मैं दो ही चीजें बताया करता हूं। अपने विचार ऊंचे रखो। ऊंचे तभी रहेंगे जब अपने व्यवहार को ऊंचा रखोगे।

जिसके विचार गिरे हुए होते हैं वह सदा ही गिरा रहता है। उसकी कोई कद्र नहीं होती है। आपने देखा होगा कि सदाचारी आदमी के सामने तो कोई बोल भी नहीं सकता। व्याभिचारी का जगह—जगह जूतों से मुंह पिटता देखा है। कितने ही खोटे कर्म हमने आज से पहले कर लिए। आज अपने मन में एक विचार द ढ़ करके बांधों कि आज के बाद हम ब्रह्मचर्य का पालन करेंगे। आज के बाद हम अपने जीवन को पवित्र रखेंगे। आज के बाद हम किसी से विरोध नहीं करेंगे। क्या फिर भी वह शिकायत करेगा कि मेरा भजन नहीं बनता? यह गलत बात है। वह कभी यह शिकायत कर ही नहीं सकता। शिकायत वही आदमी करता है जिसका दिमाग खराब हो जाता है। दिमाग किसका खराब होता है? उसी का खराब होगा जो नशे करेगा। सुरत किसकी गंदी होती है? उसी की सुरत गंदी होगी जो ज्यादा विषय—विकारों में रहता है। आपने सुना होगा—

लग रही आफता, नहीं धापता,
मग की गैल हो रहा चीता।।
कहे चिम्मन अंत में, जागा रीते का रीता।।

इसीलिए संत महात्मा कहते आए हैं कि—

देखो सब जग जात बहा।
देख—देख गति या जग की बार—बार यों वर्ण कहा।

तुलसी दास जी कहते हैं—

जन्म मरण दुख हो अति भारा।
पीड़ा इतनी ज्यों बिच्छु मारहिं डंक हजारा।।

जन्म मरण का दुख बड़ा भारी है। इसमें इतनी पीड़ा होती है जितनी एक हजार बिच्छुओं के डंक मारने में होती है। ये आदमी का चोला इसीलिए तो इतना अधिक कीमती है कि इस चोले में आकर ही हम बच सकते हैं और किसी चोले में नहीं बच सकते। जिनकी भी तुम पूजा बंदगी करते हो, फल तो उन सभी का

मिलता है पर मैं बात करता हूं कि संसार में बार—बार न आना पड़े।

मैं महात्माओं के पास काफी घूमा हूं। पर मैंने किसी से यह नहीं कहा कि मुझे धन चाहिए, औलाद चाहिए या कोई और चीज चाहिए। मत्था टेक कर अपने मन में यही कहा करता था—हे महाराज! मुझे इस संसार में फिर न आने देना। एक दिन पंडित फकीर चन्द जी महाराज बैठे थे। मैंने मत्था टेका तो उन्होंने मत्था टेकते ही कहा—बेटा! घबरा मत। तेरा और मेरा जो कर्जा था, उसको चुका चले और अब नहीं आएंगे। मैं गौड़ ब्राह्मण हूं और राधास्वामी धाम से आया हूं। मैंने बता दिया, आप भी नहीं आओगे और मैं भी नहीं आऊंगा। यह बात तो वही जानते हैं, मुझे तो पता नहीं है। मैं महाराज जी के पास बैठा था। कई लोग तो उनसे पूछ रहे थे पर मैंने नहीं पूछा। उन्होंने उनको बताया कि तुम्हें एक दो बार आना पड़ेगा, क्योंकि अभी तुम्हारे अन्दर अहंकार बाकी है। मैंने मत्था टेका पर पूछा कुछ नहीं। उन्होंने मुझसे कहा—पगला! तू नहीं आएगा। तू तो मेरी मदद करने के लिए ही आया है। तेरा यही काम था। तेरी यही डियूटी थी। तू फिर नहीं आयेगा। अब मुझे तो कुछ पता नहीं है। मैं तों उनकी बातों पर विश्वास करता हूं। अगर मेरी बात पर तुम्हारा विश्वास है तो मेरी एक ही बात मान लेना, केवल औलाद के लिए ही अपने घरों में रति दो। फिर ब्रह्मचर्य का पालन करो। फिर देखो क्या होता है? एक दोहा कहा करते हैं—

तू बांध कमर क्यों डरता है।
फिर देख खुदा क्या करता है।।

टिका रह, टिका रह मत हो डांवां डोल।
डिगे की कौड़ी नहीं, टिके के लाखों मोल।।

मैं यह बात उन अभ्यासियों के लिए कहता हूं जिन्हें अपने घर पहुंचना है। जिन्हें अपनी आत्मा पवित्र करनी है, जिन्हें अपनी

आत्मा मलिन करनी है उनके लिए मेरा सत्संग नहीं है। न मैं कोई पक्षपाती हूं और न मैं कौमों का पाबन्द हूं। न मैं किसी जाति—पांति से बंधा हूं। सीधा आदमी हूं और सीधी बात कहता हूं। न ही मैं राधास्वामी मत से बंधा हुआ हूं। मैं तो शब्द से बंधा हुआ हूं। शब्द से बाहर कुछ है भी नहीं और न हुआ और न हो सकता है। जो शब्द को नहीं समझे, उन लोगों को आदमी का चोला फिर नहीं मिलेगा। उन को पशु का चोला मिलेगा। ईशा मसीह ने भी कहा हैं—अगर कोई शब्द की निंदा करता है उसको मेरा पिता नहीं बख्शेगा। संत तो सभी कहते हैं कि जो शब्द को नहीं समझे, जो शब्द की निंदा करते हैं उनको खुदा नहीं बख्शेगा। वेदों में लिखा है—

नेति नेति (न+इति, न+इति)

वेद कहते हैं कि वह और भी आगे और भी आगे है। वेदों में ब्रह्म का वर्णन है। पारब्रह्म का वर्णन नहीं है। मनु जी महाराज कहते हैं कि यदि वेद के एक ही अक्षर का अर्थ गलत कर ले तो उसकी सात पीढ़ियां नर्क में जाती हैं। इसी तरह यदि संत की वाणी का भी कोई यदि अर्थ गलत लगाएगा तो उसकी चौदह पीढ़ियां नर्क में चली जाएंगी। मैं आप लोगों को ये बातें क्यों कहता हूं? क्योंकि संत की बात को सन्त ही जानता है। अगर कोई किसी संत की वाणी का बुद्धि से अर्थ करता है तो नहीं हो सकता। वह बिगड़ जाएगा। पर ये बातें सीखी नहीं जाती। बल्कि काम करना सीखो। अभ्यास करना सीखो। मैंने बताया है कि ब्रह्मचारी बिना अभ्यास के ही ब्रह्म में पहुंच जाएगा। ब्रह्मचारी दो तरह से होते हैं—एक मन से और दूसरा तन से। अगर दोनों हो जाएं तब तो कहना ही क्या है। फिर भी जो मन का ब्रह्मचारी है वह भी तीनों लोकों को जीत जाता है। तन का इलाज तो हो जाता है। परन्तु मन का इलाज नहीं होता। माताओ! बहनों! आप कहोगी कि

महाराज जी तो इन भाइयों के लिए ही कहते हैं। नहीं, तुम्हारा हक भी बराबर है। हमारी बहनें बड़ी—बड़ी महात्मा हुई, सहजो बाई और मीरा बाई जैसी। अब भी बहुत सी ऐसी हैं जो अभ्यासिन हैं वे अपना जीवन सारे का सारा कुर्बान कर देती हैं। जवानी को ठोकर मार कर अन्तर में अपने सतगुरू को प्रगट कर लेती हैं। कौन से सतगुरू को? उस शब्द को, उस कुल मालिक, राधास्वामी दयाल को प्रगट कर लेती हैं। उस पर सभी का हक बराबर है। यह मन जप, तप, पूजा, पाठ, होम, यज्ञ, दान और पुण्य से काबू में नहीं आएगा। यह तो शब्द की धुनी सुनकर ही काबू में आएगा।

शब्द धुन सुनकर मन पतियायी।

स्वामी जी कहते हैं—

जन्म—जन्म दुख पावत बीते एक दिन कहीं न चैन लहा।

जन्म के जन्म ही दुख में बीत जाते हैं एक क्षण भी कहीं सुख नहीं मिलता। कहीं सुख हो तो बताओ? काल महाराज ने सत पुरुष, राधास्वामी दयाल, उस रमे हुए राम के आगे यह विनती की—महाराज! आप मेरी ये तीन बातें मान लो, नहीं तो मेरा देश उजड़ जाएगा। सतपुरुष ने कहा—बताओ? उसने कहा—एक तो संत अपनी करामातें न दिखाएं। नहीं तो वे अपनी करामातें दिखाकर मेरे देश को उजाड़ देंगे। आपने देखे हैं जो योगी करामात दिखाते हैं, आखिर में उनकी हालत बड़ी खराब हो जाती है।

मैं महात्माओं की दशा बताता हूं। हमारे गांव में एक साधु रहा करता था। गांव में टिड्डियां आ गई। गांव वालों ने कहा—महाराज! हम मर गए। टिड्डियों ने पौर दे दिया। मुझे तो पता नहीं। गांव की सुनी हुई बातें हैं। बताते हैं कि उसने अपनी लंगोटी निकाल कर आग में डाल दी। वे सारी ही टिड्डियां मर गई। दो महीने बाद वह भी तड़प कर मर गया। सोचो! क्या हुआ? कहते हैं—

सती श्रापै नहीं और गुंडी का कुछ लागै नहीं।

गांव में किसी ने एक सांड मार दिया। वह एक बाबा जी का सांड था। गांव वालों ने उसको चोर नहीं दिया तो उसने गांव को श्राप दे दिया। उसने कहा—मेरा जो चोर है वह बिटोड़े पर चढ़कर मरेगा। आखिर में वह चोर एक बिटोड़े पर चढ़ कर मरा। जब गांव में आग लगी तो वह घर से भाग निकला और एक बिटोड़े पर जा चढ़ा। आग उस बिटोड़े के चारों तरफ फिर गई। वह उसी के ऊपर मर गया। पर वह महात्मा भी कोढ़ी हो गया। इसी कारण से संत बच कर रहते है। संत किसी को श्राप नहीं देते हैं। संत का हृदय साफ होता है। साधु का हृदय लाल होता है। सत्संगी का हृदय हरा होता है। संसारी का हृदय काला होता है। सत्संगी उसी का नाम है जो दूसरे सत्संगी को देखकर खुश हो जाए। वह प्यार बढ़ाता है। संत उसी को कहते हैं जिसका हृदय साफ हो। चाहे कोई कुछ भी कहता रहे। संत बनना है तो सहन करने की शिक्षा लो, सहन करना सीखो। पर साधु का हृदय लाल होता है। हर वक्त क्रोध की अग्नि झलकती रहती है। ये नीचे की विद्याएं हैं। इनमें मुक्ति नहीं है। सो युग बीत गए कभी चैन नहीं मिला। हमें चैन कैसे मिले, कहां मिले? चैन की बातें तो हम करते ही नहीं। चैन की कोशिशें करें तभी कुछ मिले। पर चैन तो हमें आदमी के ही चोले में मिलता है। न गाय—भैंसों के चोले में चैन है, न चैन देवी देवताओं को, न पित्तर भूतों को है और न ब्रह्मा, विष्णु को है। उनके चोले में भी चैन नहीं है। उनकी मिशालें भी आती हैं। वे भी दुखी हैं। आपने सुना होगा कि सारा संसार ही दुखी है। कोई भी सुखी नजर नहीं आता है।

साच कहूं तो कोई न मानै, झूठ कहा नहीं जाई हो।
ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर दुखिया जिन ये राह चलाई हो।।

कबीर साहब ने उनको भी दुखी बताया है। सहजो बाई

कहती हैं—

धनवंते सभी दुखी निर्धन दुख का रूप।
साध सुखी सहजो कहै, पाया भेद अनूप।।

सुखी कौन है?

नानक दुखिया सब संसारा।
सुखिया केवल नाम आधारा।।

जिसको नाम का रस मिल गया, नाम का सहारा मिल गया, जो नाम लेकर अपना उद्धार करवा लेता है, वही सुखी है। अब सारे जग की दशा कैसे कही जाए? कभी किसी को चैन नहीं मिला। जब आदमी के चोले में ही चैन नहीं, तो पशु योनि में कैसे मिलेगा? तुलसी दास जी कहते हैं—

नौ लाख जल के जीव हैं, दस लाख पखेरू जान।
एकादश कीट भंग हैं, स्थावर बीस बखान।।
तीस लाख पशु योनि हैं, चार लाख नर होई।
तुलसी जो इनमें राम भजे, धन्य है सोई।।

तुलसी दास जी कहते हैं कि जो राम का भजन करता है, वही धन्य है, नहीं तो सारे ही व था जाते हैं। लख चौरासी में कहीं भी चैन नहीं है। युग के युग बीत गए हैं। कभी शांति नहीं मिलती है। लख चौरासी में भरमते—भरमते तो आदमी का चोला मिला और इसको भी आपने विकारों में बर्बाद कर दिया। समझो! वक्त जाने लग रहा है। इसके बारे में गरीब दास जी महाराज कहते हैं—

आज का लाहा लीजिए कल किसको होई।
ये तन माटी में मिलै जानै सब कोई।।
लखी, करोड़ी चले गए, बहु जोड़ खजाना।
जा तन चंदन लेपते, सो धरे शमसाना।।
हस्ती घोड़े पालसी, दलबल बहु साजा।
सवा लाख संगी गए, रावन से राजा।।

कुंभकर्ण से वीर थे, लंका छत्र धारी।
नाम बिना वंश डूबिया समझावै नारी।।

अर्थात् नाम के बिना बड़े—बड़े वंश डूब जाते हैं। रावण सरीखे मारे गए। हिरण्यकश्यप जैसे मारे गए। सब के ही वंश डूब गए। कौन तिरता है? केवल नाम के प्रताप वाला ही तिरता है। कई लोग कहते हैं—नाम दो हैं। मैं भी कहता हूं—नाम दो हैं। एक धुनात्मक और दूसरा वर्णात्मक। अगर तुम वर्णात्मक नाम नहीं जपोगे तो धुनात्मक नाम में नहीं जा सकते। वर्णात्मक को विश्वास द्वारा पक्का करो। वही वर्णात्मक नाम छठे चक्कर से ऊपर जाएगा तो धुनात्मक बन जाएगा। फिर तुम्हें जुबान से जपने की कोई भी जरूरत नहीं रहेगी। सो ही संत कहते हैं। सारा ही जग बहा जा रहा है।

जन्म—जन्म दुख पावत बीते एक छिन कहीं न चैन लहा।
पाप पुण्य बस विपता भोगी नहीं सतगुरू का चरण गहा।।

इस पाप और पुण्य को चित्र गुप्त कहते हैं। इसी को स्वर्ग और बैकुण्ठ कहते हैं। इसी को देवता, राम, क ष्ण, राक्षस या भूत कहते हैं। जिसके कर्म खोटे हैं, जिसने सारी जिन्दगी पाप किए उसको आखरी में यम के दूत दिखते हैं। वे कौन होते हैं? वह उनका पाप होता है। जिन्होंने अच्छे कर्म किए होते हैं उनको लेने के लिए सतगुरू आते हैं। राम और क ष्ण आते हैं, हनुमान आता है, जिसका जैसा भाव होता है, वही आता है। उनके वे पुण्य लेने के लिए आते हैं। वे देवी देवता राम और क ष्ण बन जाते हैं। सतगुरू और गुरू बन जाते हैं। इन्हीं को चित्रगुप्त भी कहते हैं। इन्हीं को कहते हैं कि देवता लेने आए हैं या यमदूत लेने आए हैं। पाप राक्षस है पुण्य देवता है।

सो प्रेमियो! अपनी विपता भोगते—भोगते समय गुजर गया है।

अब ये देह मिली क पा से करो भक्ति जो कर्म दहा।
अब की चूक माफ नहीं होगी नाना विधि के कष्ट सहा।।

बड़े पुण्यों के प्रताप से यह शरीर मिला है। सो भक्ति करो। आपने रामायण की बातें भी सुनी होगी—

बड़े भाग मानुष तन पावा। सुर दुर्लभ सद ग्रंथन गावा।।

बड़ी मुश्किल से यह चोला मिलता है। देवी देवता भी इसको तरसते हैं। यह एक कर्म भूमि है। इस कर्म भूमि में आने के बाद भी अगर चूक गये तो चूक ही गये। इसीलिए कहते हैं—अच्छे कर्म करो। अच्छे कर्मों का अच्छा ही फल मिलेगा। बुरे कर्मों से बचो।

गफलत छोड़ भुलाओ जग को नाम अमल अब घोट पिया।
मन से डरो करो गुरू सेवा राधास्वामी भेद दिया।।

मैंने गफलत की बातें पहले भी बताई हैं। पहली गफलत तो यही है कि अपने ईष्ट को छोड़कर दूसरे की तरफ जाते हैं। अपने अच्छे विचार छोड़ कर गंदे विचार पकड़ लेते हैं। यह भी गफलत है। हम बड़ी—बड़ी डींगें मारते हैं और काम नहीं करते। यह भी गफलत है। यदि मैं आप के आगे बड़ी—बड़ी डींग मारता हूं और काम नहीं करता हूं तो मैं भी गफलत करता हूं। सो बातों को अपने ऊपर ही घटाना चाहिए। इस गफलत को छोड़ दो और जग को भुला दो तब नाम का सुमरन करो। उसका जो रस है उसे पीओ। वह सब से बड़ा अम त रस है। वह नाम तुम्हारे अंदर है। जब नाम का सुमरन करोगे तो आहिस्ता—आहिस्ता ऐसी टंकोर लग जाएगी कि अपने आप ही सुमरन होता रहेगा। जैसे कबीर साहब ने कहा है—

माला फेरूं न हर भजूं, मुख से कहूं न राम।
मेरा साईं मो को भजै तब पाऊं विश्राम।।

खुद ही वह धुनी सुनने लग जाएगी। उसको पांच धुनी कहते हैं। जाप नहीं होता है तब भी। वह तो कुदरती धुनी है। सुनते—सुनते आगे चले जाते हैं। जैसे भक्ति में हम तीन चीजों को लेते हैं। सुमरन—ध्यान और भजन। पहले हम सुमरन करते हैं, तब दोनों

दूसरी चीजें गायब रहती हैं। सुमरन तो जुबान से होता है। तब ध्यान और भजन दोनों ही गायब रहते हैं। वे दोनों नजर नहीं पड़ते हैं। सुमरन करते—करते वही अंतर में चला जाता है और शरीर सूना हो जाता है। साधन करने वालों को इसका पता है। इतना सूना हो जाता है कि हम सब कुछ भूल जाते हैं। जुबान का सुमरन भी भूल जाते हैं। वही सुमरन अन्तर में सुनाई देने लग जाता है। वहां आप ही आप सुमरन होता है। वह सुमरन हमें ध्यान के लक्ष्य में ले जाता है। हमारी पुतलियां अपने आप ही उल्ट जाती हैं। महात्मा तो अपना तजुर्बा बता देते हैं। पुतली उलटते ही सुमरन तो गायब हो जाता है फिर हम ध्यान में लग जाते हैं। वह ध्यान क्या करता है? ध्यान हमें ऊपर की तरफ ले जाएगा। उस ध्यान में से शब्द की झलक आएगी। शब्द की झलक क्यों आएगी? उस प्रकाश का हमने ध्यान किया वह धार शब्द से ही आई थी। वही धार जब उल्टी ऊपर को चढ़ेगी तो शब्द में चली जाएगी। जब आप शब्द में पहुंच जाओगे तो क्या कहोगे? अब दोनों सुमरन और ध्यान भी गायब नहीं होते हैं। वहां शब्द की धुनी सुनाई पड़ती है, वह सुमरन है। वहां शब्द का क्या रंग रूप होता है? कोई नहीं होता है। पर रंग रूप होता है। कौन सा? यह ध्वनि न्यारी होती है और उसकी गाज होती है। वह दूसरी चीज है उसके दो भाग हो जाते हैं। जैसे कोई घंटा बजाए तो घंटे की टन की आवाज आती है और दूसरी उसकी गूंज भी होती है। इस तरह दो भाग बन जाते हैं। तुम जाओगे तभी पता चलेगा। ये तीनों चीजें वहां सूक्ष्म रूप से होती ही रहती हैं। पर यह नहीं है कि तुम कह दो कि निचले स्थानों की धुनी भी चलती रहती है। यह बात नहीं है। जैसे कई मंदिरों में चले जाते हैं। एक आदमी की तीन—चार छायां दिखाई देती हैं। इसी तरह तुम उस जगह पर शब्द में पहुंचोगे। उस शब्द में तीनों गुण मौजूद हैं। सुमरन भी, ध्यान भी और भजन भी। इस तरह काम बन जाता है। साधन करने वाले की बातें बताई

कि तीनों चीजों को जो मौजूद समझ लेता है उसका काम बन जाता है। पर ये उनके लिए ही हैं जिन्हें आगे का पता है, उनका सुमरन पक्का है। तब वे काम करते हैं। आगे कहते हैं—

मन से डरो करो गुरू सेवा, राधास्वामी भेद दिया।

आप कौन सी गुरू सेवा करते हो? मैंने आप लोगों को बताया कि जो आप दरबार की सेवा करते हो यह भी गुरू की सेवा है। लंगर में कोई कुछ देता है यह भी गुरू की सेवा है। अगर गुरू के हुक्म से कोई किताबों का काम करता है यह भी गुरू की सेवा है। पर सबसे बड़ी जो सेवा है वह गुरू का भी उद्धार करती है और शिष्य का भी उद्धार कर देगी। वह सेवा न धन है, न वह विद्या की है, न कोई और है। वह सेवा सुमरन की है। वह सेवा ध्यान की है। घंटा—आधा घंटा सवेरे बैठो और घंटा आधा घंटा शाम को बैठो। वह एक नौकरी है। उस मजदूरी को 'वह' रखेगा नहीं। जैसा काम करोगे वैसी तनखा मिल जाएगी। दुनिया ही नौकरी नहीं रखती है तो मालिक कैसे रखेगा? सो वही सब से बड़ी सेवा है। उसे हम गुरू सेवा कहते हैं। जो दरबार में सेवा करते हैं उसे भी गुरू की सेवा ही कहता हूं। इस इन्सान के तीन—चार कर्म होते हैं। जिसने धन से कोई पाप किया है, सतगुरू उससे धन की सेवा करवा लेता है। जिसने तन से पाप किया होता है, उससे तन की सेवा ले लेते हैं। प्रसाद बनाओ या बुहारी झाड़ी करो। पंखा फेरो और चुल्हा चौका और दूसरे काम करो। खेतों का काम करो। दयाल बाग में कहते हैं कि घास की जड़ काटोगे तो कर्मों की जड़े कट जाएंगी। एक दिन मैंने सोचा—ये क्या कहते हैं? अब सोचता हूं कि उन्होंने बिल्कुल ठीक बात कही थी। क्यों? मैं भी वहां गया था। उस सेवा में आकर अहंकार टूट जाता है। वहां बड़े—बड़े राजा लोग आकर कस्सी और खुरपे के साथ काम करते हैं। वहां अहंकार अपने आप ही टूट जाता है। जब अहंकार नहीं रहता है तो यह भी समझ लो कि सेवा सफल हो गई। यही सब से बड़ी तन की सेवा है। कोई मन की सेवा करता है, सुमरन करते रहो। मालिक को याद रखो।

फिर कोई सेवा सुरत की भी है। जो सुरत की सेवा करता है तो बाकी सभी सेवाएं अपने आप बन जाती हैं। यदि सुरत की सेवा नहीं कर सकते, तो धन की करो। धन की सेवा नहीं कर सकते, तो तन की सेवा करो। तन की सेवा भी नहीं होती तो मन की सेवा करो। ये चार सेवाएं बताई हैं। इसीलिए संतमत में तो यही सेवा सब से बड़ी है कि अपनी सुरत को पिंड और ब्रह्मांड से खाली करके पार ब्रह्म में ले जाओ, जन्म मरण का पीछा छूट जाएगा। यह बार—बार सभी कहते हैं। काफी लोग जन्म मरण को मानते भी नहीं हैं। कहते हैं कि ये तो बात ही गलत है। जैसे मिट्टी के ढेले को उखाड़ कर हवा में रख दो सूख जाएगा। इसी तरह यह जोहड़ सूख जाता है। जन्म मरण कोई भी नहीं है। कई ऐसे धर्म हैं जो यही भरोसा रखते हैं कि हमारा पिता फिर आएगा तो वह हम सभी को कब्रों में से निकाल कर जिन्दा कर देगा। कई कहते हैं कि कहीं कुछ भी नहीं है। यह आना जाना सब पाखंड है। बस आदमी—आदमी ही बनते रहेंगे और स्त्री, स्त्री ही बनती रहेंगी। तो ये तो बड़ा भारी जुल्म ही है। पशु, पशु ही बनते रहेंगे तो बड़ा भारी जुल्म ही है। वे बड़ी मिशालें देकर समझाते हैं कि आदमी को भी नर्क भोगना पड़ता है। ये पागल देखते हो कितने दुखी होते हैं। वे तो गिनती के ही होते हैं और ये खोटे कर्म करने वाले तो असंख्य दिखाई देते हैं। क्या पशु पशु ही रहेंगे? क्या आदमी आदमी ही बनते रहेंगे? नहीं, यह हमारे ऋषियों का सिद्धांत नहीं है। यह तो उन लोगों का सिद्धान्त है जो वेदान्ती हैं। जो नए—नए बने हैं। वे कहते हैं कि मुक्ति मियादी होती है। अनादि नहीं है। मुक्ति को तो सभी ने जितने भी ऋषि मुनि हुए हैं अनादि बताया है। मियादी नहीं बताया है। मुक्ति मियादी ही है तो फिर जुल्म ही हो जाएगा। जैसे एक बहुत बढ़िया बकरे को पाल लिया। उसको अच्छा खाना दिया। पर उसका समय रख दिया कि अमुक दिन इसको काट दिया जाएगा। फिर उस बेचारे को खाना भी क्या खिलाना है? निश्चित समय के आते ही वह मार दिया जाएगा।

उसकी तो मुक्ति यही होगी। एक हजार या दो हजार की आयु है, तो फिर आकर नर्क भोगो। फिर परिश्रम भी क्या करना है? संत तो कहते हैं कि मुक्ति अनादि है। मियादी नहीं है। अगर ये बातें किसी के समझ में नहीं आई हैं तो मैं क्या करूं? मैं तो अपने बुजुर्गो की बातें मान कर ही कहता हूं। पर एक बात जरूर कहूंगा—

जा को दर्शन इत हैं, वा को द र्शन उत।
जाको दर्शन इत नहीं, वाको इत न उत।।

जिसको यहां शांति नहीं है तो मर करके तो उसकी सात पीढ़ियां भी शान्ति नहीं दे सकती। इसलिए शांति है तो एक सतगुरू के ही दरबार में है। वह किस जगह है? केवल नाम में। उस परमात्मा के नाम में है और किसी चीज में शान्ति नहीं है। आप देखते हो कि बड़े—बड़े नेता, सेठ साहुकार धन इकट्ठा कर लेते हैं। उनके पास कहीं रखने के लिए भी जगह नहीं रहती है। फिर भी उनको शांति नहीं है। किसी ने बहुत बढ़िया कोठी बनाई। उसका बाप उस कोठी में चला गया और देख कर उस पर लट्टू हो गया। उसने कहा—वाह बेटा ! अच्छी कोठी बनाई। बड़ी शानदार बनाई। थोड़े ही दिनों बाद किसी ने आकर कह दिया कि आज कोठी में आग लग गई। कोठी सारी ही जल गई। पहले तो वह खुश था वही अब तड़प उठा। टक्करें मारनी शुरू कर दी कि हाय कोठी जल गई। दूसरा आदमी आया और पूछा—क्यों रोता है? उसने कहा—कोठी जल गई इस लिए रोता हूं। उसने कहा—अगर वह जल गई तो जलने दे। उसको तो तेरे बेटे ने बेच ही दिया था। १५ दिन हो चुके उसके तो रूपये भी ले लिए थे। ये कोठी तो उसकी जली है। उसने कहा—फिर तो कोई बात नहीं है। अब आप बताओ! ऐसा होता है या नहीं। जब पहले ही इतना संतोष हो तो कहना ही क्या है। संतमत में ये बातें होती हैं। मेरे गुरू महाराज के जब लड़के गुजरे तो लोगों को वे शिक्षा दिया करते थे कि भाई यह तो संसार का खेल है। यूं ही यहां आते हैं

और यूं ही जाते हैं। उनकी आंखों में कभी भी पानी नहीं आया। यह संसार का खेल ही ऐसा है। भागी तो वही आदमी है जिसने अपना जीवन सफल कर लिया। भाईयों ! संसार में नजदीक होना ही ज्यादा दुख है। दूर रहने वालों को दुख नहीं है।

मैंने आपके आगे एक मिशाल दी थी। बहुत पहले से ही महाराज जी से सुनता आ रहा था। एक सेठ कहीं बाहर दिसावरों में चला गया। उसने वहां जाकर बड़ा भारी धन कमाया। उसका एक ही लड़का था। वह घर पर था। लड़का छोटा ही था। १०—१२ वर्ष का। वह लड़का जवान हो गया। लड़के ने कहा—मां! खर्चा तो चलता नहीं है। कैसे करें? मैं अपने बाप के पास ही चला जाऊं। उसकी मां ने कहा—जा बेटा! उसकी मां ने उसको सारा रास्ता बता दिया कि इस तरह से जाना है और उसको रास्ते का खर्च भी दे दिया। इधर से लड़का चल पड़ा और उधर से सेठ भी चल पड़ा। दोनों के दोनों रास्ते में किसी शहर में धर्मशाला में आ ठहरे। इसी समय क्या घटना घटी? सेठ के पास नौकर चाकर थे। उनके गाने बजाने शुरू हो गए। लड़का वहां एक तरफ बैठा था। उस लड़के के पेट में दर्द हो गया। पेट में दर्द होते ही उसने चिल्लाना शुरू कर दिया। सेठ के चमचों ने (उन नौकर चाकरों ने) कहा कि यह क्या कर रहा है। इसको बाहर पटक दो। यह शोर मचाता है। सेठ को गाने बजाने में बाधा पहुंचती है। उसके नौकर चाकर उस लड़के को बाहर ले गए। उन्होंने उसको बाहर दरवाजे पर बिठा दिया। वहां पहरे पर कोई पुलिस का सिपाही खड़ा था। उसने उससे पूछा—क्या बात है? लड़के ने कहा—मेरे पेट में दर्द हो गया है और मैं मरूंगा। मेरे प्राण निकल रहे हैं। इसी दौरान सेठ भी बाहर पेशाब करने आया। सेठ बाहर पेशाब कर रहा था उस समय पुलिस वाला उस लड़के से पूछ रहा था। लड़के ने कहा—आप लिख लो, मैं मरूंगा। सिपाही ने उसका गांव, पता पूछा। लड़के ने गांव का नाम बताया। सेठ के कान खड़े हो गए कि यह तो मेरे ही गांव का है। सिपाही ने पूछा—किस काम आया था? उसने

बताया—मेरे पिता जी दिसावरों में काम करते हैं, वहां जा रहा था। सिपाही ने पूछा—तेरे पिता जी का क्या नाम है? लड़के ने अपने बाप का नाम बताया और उसने अपना नाम भी बता दिया। यह सब लिखवा कर उसने चोला छोड़ दिया। उसके प्राण निकल गए। सेठ पेशाब करके आया और बिलखते–बिलखते लड़के के ऊपर गिर पड़ा और बिलखते हुए ही बताया मैं तो लुट गया हूं। अन्दर से भी आदमी दौड़ते हुए आए। उन्होंने पूछा क्या बात हो गई? सेठ ने कहा—मैं तो लुट गया।

वह लड़का पहले भी उसी का था। उस वक्त उसे इतना दुख नहीं हुआ था। फिर बाद में इतना दुख हो गया कि वह चीखने चिल्लाने भी लग गया क्योंकि वह लड़का उसके नजदीक आ गया था। इसी कारण जग बहा जा रहा है। जब तुम 'उस' सबसे नजदीक वाले को समझ लोगे तो उन भूले भटकों में नहीं फंसोगे। वह सबसे नजदीक तो केवल सतगुरू ही है। वही हमारी सारी जिन्दगी का साथी है। वह आदि और अंत का सभी युगों का साथी है। वही हमें अपने घर ले जा सकता है। इसी के अन्दर से हम आये थे। वही हमें अपने ठिकाने पहुंचा सकता है। उससे बड़ा हमारा कोई भी साथी नहीं है। या तुम सीधे शब्दों में यह समझ लो कि हमारा साथी वह परमात्मा है। वह राधास्वामी दयाल है। वह शब्द है। मैं उस शब्द और परमात्मा को ही सतगुरू कहता हूं। पर वह परमात्मा तो सभी में है। जिसमें वह प्रगट हो जाता है वही सतगुरू हो जाता है। कहते हैं—

घट–घट मेरा साइयां, खाली घट नहीं कोय।
बलिहारी वा घट की, जा घट प्रगट होय।।

।। राधास्वामी।।

ध्यानाकर्षण बिन्दु

सभी सत्संगियों को स्मरण कराया जाता है कि प्रत्येक आश्रम से सत्संगियों की दिनोद धाम में सेवा की बारी आती है। अतः आप सभी अपनी–2 शाखा में जाकर अपनी सेवा का समय पूछें और निश्चित समय पर धाम में सेवा तथा दर्शन लाभ उठायें।

जुलाई व अगस्त मास के लिए सेवा कार्यक्रम

1	पुट्ठी समाण	28 जुलाई – 3 अगस्त
2	मोठ	4 अगस्त – 10 अगस्त
3	अण्टा	11 अगस्त – 17 अक्टूबर
4	फतेहाबाद	18 अगस्त – 24 अगस्त
5	रोहतक	25 अगस्त – 7 सितम्बर
6	खिडवाली	8 सितम्बर – 14 सितम्बर

विशेष सूचना

सभी सत्संगियों को सूचित किया जाता है कि हमें पिछले वार्षिक सत्संग दिनांक 19 – 20 नवम्बर, 2002 को किसी सत्संग-प्रेमी का खोया हुआ कुछ कीमती सामान मिला है। जिस किसी भी भाई व बहन का है कपया वह पहचान बता कर राधास्वामी सत्संग (दिनोद), रोहतक रोड़, भिवानी में आकर प्राप्त कर सकते हैं।

।। राधास्वामी।।

बड़े हुजूर महाराज परम सन्त ताराचन्द जी द्वारा फरमाये विडियो कैसेट व विडियो सी. डी का भण्डार

अन्तिम यात्रा विडियो कसेट व विडियो सी. डी

परम सन्त हुजूर कंवर सिंह जी महाराज द्वारा फरमाये विडियो कैसेट व विडियो सी. डी का भण्डार

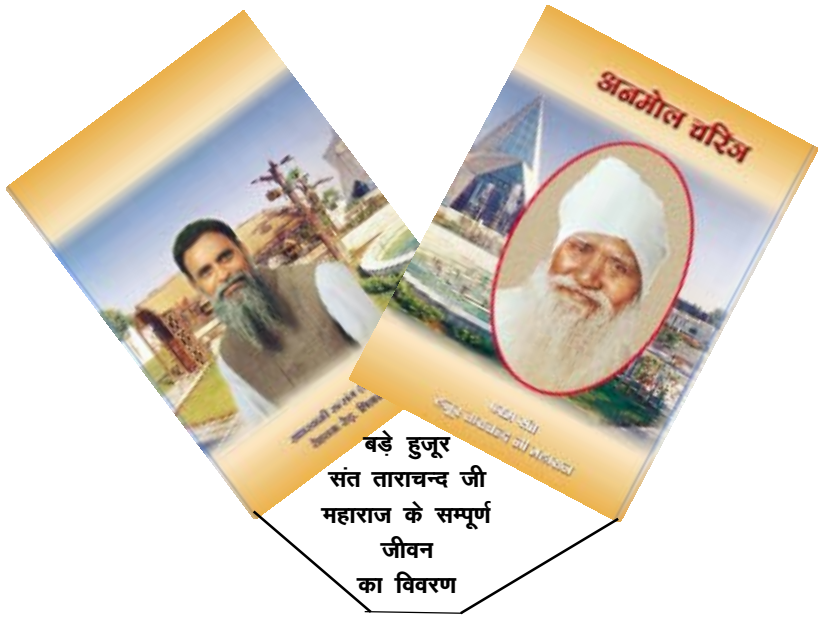

सेवा का अंग

महर्षि शिवव्रत लाल जी

एक समय कबीर साहब यात्रा पर थे गर्मी का दिन था। प्यास लगी। व क्ष के नीचे, कुएं के पास एक युवक हाथ में लोटा रस्सी लिये हुये दिखाई दिया। वे उसके पास गये और प्रेम से उससे बोले, "बेटे थोड़ा पानी पिला दे।" परमात्मा ही जानता है कि उन सार शब्दों में क्या जादू था उसने झटपट ताजा पानी निकाला और उनको पिलाया।

पानी पीकर कबीर साहब व क्ष के नीचे छाया में बैठ गये। वह भी उनके पास आया और उनकी आक ति को देखता है। उसने उत्तर दिया, "यह मैं नहीं जानता पर मुझे तुम्हारे साथ प्रेम का अनुभव होता है और जी यही चाहता है कि हर समय तुम्हारी आक ति देखता रहूं। कबीर साहब मुस्कराये और वह चुपचाप वहां बैठा हुआ, उनको उसी भांति देखता रहा।"

जब वे चलने को हुए, वह भी उठ खड़ा हुआ। कबीर साहब ने पूछा "अब क्या चाहता है" उसने उत्तर दिया, "जी चाहता है, तुम्हारे साथ चलूं और तुम्हारे साथ रहूं" उन्होने पूछा ऐसा क्यों? उसने कहा, "मैं नहीं जानता।" कबीर साहब बोले, "अच्छा चल," और दोनों ही वहां से चलकर बनारस आये। यहां आकर कबीर साहब ने उसके रहने और खाने पीने का प थक प्रबंध करा दिया और उसे सत्संग में उपस्थित रहने की आज्ञा दी। इस मनुष्य ने कभी भूलकर भी उनसे प्रश्न नहीं किया। जब कबीर साहब ने देखा कि यह उत्तम अधिकारी है, स्वयं ही उसे उपदेश दिया और सत्संगियों की सेवा का काम उसको सौंप दिया, जिसे वह बड़े चाव से करता रहा, वर्षो बीत गये और उसने एक दिन भी सतगुरु का साथ नहीं छोड़ा। इस मनुष्य की चेतावनी सब से भिन्न थी। जब कबीर साहब शाह कमाल को बम्बई और गुजरात की ओर प्रचार हेतु भेजने लगे, उसे भी बुलाया और कहा। कमाल दक्षिण को जा रहा है, अब मेरी इच्छा है कि तू दक्षिण जाकर प्राणियों को चेताने की सेवा का उत्तरदायित्व स्वयं संभाल ले। मैं वहां भी हर समय तुम्हारे साथ रहूंगा और तू अपने आपको अकेला ना पायेगा।

उसने प्रेम–युक्त शब्दों में उत्तर दिया "यदि आप साथ नहीं" छोड़ते, तो मैं चाहे दक्षिण में रहूं अथवा उत्तर में मेरे लिये हर स्थान बराबर है। उसे सदा कबीर साहब के दर्शन होते रहे और ये जीवन–पर्यन्त उसी सेवा में रत होकर गुरु पदवी से बचते रहे और पूरा जीवन इसी कार्य में समाप्त किया। सेवक हो तो ऐसा। इस सेवक का नाम नित्यानन्द प्रसिद्ध है।●

अनमोल वचन

- कालमत वह है जो भूतकाल और वर्तमान समय के अनुसार आध्यात्मिक भाव के गति देने में सहायक होता है।

-महर्षि शिवव्रत लाल जी

- सतगुरु के बचन में ताकत होती है। उनसे चाहे एक बात कितनी ही बार क्यो न सुनों उसमें हर बार अधिक रस आता है।

-परमसंत ताराचन्द जी महाराज

- सतगुरु में काम, कोध, लोभ और अहंकार नही होता।

-तुलसी साहब

- जीव का उद्धार सतगुरु के बिना नहीं हो सकता इसलिये सतगुरु खोजना जरुरी है, अगर सतगुरु पूर्ण मिल जाये तो वह जीव को चौरासी से मुक्ति दिला देते हैं। *-स्वामी जी महाराज*
- एक सांस की कीमत तीन लोक के बराबर है। *-कबीर साहिब*
- जो मनुष्य आजन्म पूर्ण ब्रह्मचारी रहता है उसके लिये इस संसार में कोई भी ऐसा पदार्थ नहीं है, जो वह प्राप्त न कर सके।

-भीष्म पितामह

ज्ञान-सार

- दूसरों को दुःखी देखकर उनके सहायक बनों।
- जो मान-बड़ाई की इच्छा करता है, वह विष की इच्छा करता है।
- प्रारब्ध भगवान् की प्राप्ति में बाधा नही डाल सकता।
- चित्त को मलिन करना अपने गले में छुरा लगाना है।
- भगवान् दुःख नहीं देते, दुख-निवारण का उपाय करते हैं।
- जिस प्रकार बर्फ में जल परिपूर्ण है, उसी प्रकार संसार में परमात्मा।
- मन भर चर्चा से कण भर आचरण अच्छा।

स्वास्थ्य स्तम्भ

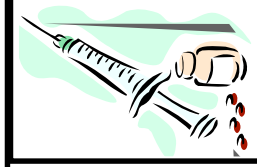

मधुमेह भाग-2

मधुमेह में मैथीदाना

छः ग्राम (दो चम्मच) मैथीदाना को कूटकर बनाया गया चूर्ण लेकर रात में एक गिलास पानी में भिगो दें।

विशेष :- गर्मियो में साबुत मैथी के बीज भिगोकर निथारा हुआ जल पीना उन लोगों के लिये अच्छा रहता है जिन्हें गर्म तासीर के पदार्थ माफिक नहीं आते।

अन्य प्रयोग :- चोकर सहित गेहूं का आटा (१० किलो) लें। फिर मैथीदाना (एक किलो) पिसवाकर उसमें मिला लें। गेहूं के आटे की मिसी रोटी बनवाकर कुछ सप्ताह खाये। मधुमेह में अवश्य लाभ होगा। साथ ही प्रयोग के शुरु करने से पहले और बाद में समय-समय पर डायबीटिज का चैकअप कराते रहें।

२. गेहूं का आटा छानने के पश्चात् चोकर (आटे का छान या बूरा, फुंजला या घुला चोकर) २० ग्राम चोकर लेकर साफ कर लें। उसको पानी के साथ आटे की तरह गुंधें। चोकर में आटा नहीं मिलाना है, इस बात का ध्यान रहें। टिकिया या पेड़ा की तरह बन जाये तब उसे तवे पर ही पका ले और प्रातः खाली पेट रोजाना ऐसी एक टिकिया का नाश्ता करें। इस प्रकार "चोकर की टिकिया" पकाकर प्रतिदिन प्रातः लगातार छः महीने तक खाने से डायबीटिज से मुक्ति मिल सकती है। ●

पुस्तक "स्वदेशी चिकित्सा सार" -डा. अजीत मेहता "आयुर्वेद रत्न"

lRlax&lkj
हिसार
10.5.2003

जीव अपने कर्मों के जाल में फँस कर इसी प्रकार मरता रहता है जैसे मकड़ी या रेशम के कीड़े अपने ही मुख के तारों से बनाए अपने घरौंदों में फँस कर मरते रहते हैं। मनुष्य बुद्धिमान होते हुए भी अपने कर्मों के बनाए हुए इस मकड़जाल को न समझकर अपने कष्टों के लिए अपने को निर्दोष बताकर परमात्मा को दोष देता है। सन्त–महात्मा उसको उसकी अपनी स्थिति समझाकर उसको

भवसागर से निकालने का प्रयत्न करते हैं। परन्तु काल महाराज उनकी आवाज को जीवों तक पहुँचने और समझने नहीं देता है। इसी कारण से जीव का भवसागर से निकालना दुष्कर हो जाता है। काल महाराज ने अपने म त्युलोक को बसाए रखने तथा जीवों को यहीं उलझाए रखने के लिए सतपुरुष से तीन वर प्राप्त कर लिए। उसने पहला वर यह प्राप्त किया कि किसी जीव को अपने पूर्व जन्म की कोई भी बात याद न रहे। दूसरे जीव को किसी भी गन्दी से गन्दी योनि में तथा किसी भी खराब अवस्था में रखा जाए, वह संतुष्ट रहे और तीसरे सन्त सतगुरु किसी भी जीव को स्वयं बुलाकर उसे अपने नाम की बख्शीश न करें। सो इस कारण जीव को अपने कर्मों तथा उनके फल के मिलने के बारें में कुछ भी पता नहीं चलता है और श्री क ष्ण जी भगवान ने अर्जुन को गीता का उपदेश देते समय अधिकतर कर्मों के भोग भोगने के बारें में ही समझाने का प्रयत्न किया है। इसके अतिरिक्त संसार के सभी धर्मो और महात्माओं ने कर्मों के सिद्धान्त को माना है। सन्त तुलसीदास जी ने रामायण में कहा है कि–

कर्म प्रधान विश्व रचि राखा। जो जस करा वैसा फल चाखा।।

स्वामी जी महाराज ने भी अपने वचनों में यह कहा कि जीव जो कर्म करता है, उसे उनको भोगना भरना पड़ता है।

परन्तु इसके साथ ही सन्त जीव को कर्मों से छुटकारा पाने का उपाय भी बताते हैं। वे कहते हैं कि–

तीन ताप से जीव दुखी है, मचा जगत में सोग।
सब रोगों की एक औषधि, करो नाम प्रयोग।।

वे जीव को जन्म–मरण सहित सभी दुखों से छुटकारा पाने के लिए उनके द्वारा बख्शे गए नाम की दवाई पीने की सलाह देते हैं। परन्तु काल महाराज ने सतपुरुष से प्राप्त तीन वरों के कारण अपने साम्राज्य में हर जीव को इतना भ्रमित कर रखा है कि न ही किसी को सन्त–असन्त का पता चलता है और न ही सच्चे और कल्याणकारी निज नाम की पहचान होती है। वे भेड़ चाल में आकर नाम लेते हैं। जिन लोगों को स्वयं को ही निज नाम का पता नहीं है तो वे न ही स्वयं कष्टों से बच सकते हैं और न ही जीवों को उन से बचा सकते हैं। इसीलिए कबीर साहब ने तो यह कहा है कि–

सच्चा सतगुरु कोई न पूजे, झूठे जग पतियासी।
अन्धे की बाँह अन्धा पकड़े, मार्ग कौन बतासी।।

आज ऐसी ही स्थिति बनी हुई है। एक अन्धा आगे चल रहा है और दूसरे अन्धे एक दूसरे की लकड़ी या कमीज का पल्ला पकड़ एक दूसरे के पीछे चल रहे हैं। लोगों को अभी भी यह पता नहीं है कि यज्ञ–हवन और योग के पुराने समय के जटिल साधनों से जीवों को कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकता है। इसी कारण से पत्थर पानी और दूसरी जड़ चीजों को पूजने वाले लोग वक्त के जीवितसन्त सतगुरु के सत्संग का मजाक उड़ाने का प्रयत्न करते हैं। स्वामी जी महाराज ने तो अपनी वाणी में आज के निर्बल जीव के लिए कष्टों से बचने का शब्द भेदी सन्त सतगुरु के पूर्ण नाम की बख्शीश प्राप्त करने का ही एकमात्र उपाय बताया है। वे कहते हैं कि–

भक्ति करो तो गुरु की करना। मार्ग शब्द गुरु से लेना।।
शब्दमार्गी गुरु न होवे। तो झूठी गुरुवाई लेवे।।

सतगुरु कृपा

गुरु धरा शीश पर हाथ, मन क्यूँ फिक्र करै।
गुरु तेरी पल-पल रक्षा करे, गुरु से काल भी डरे।।

हम काल महाराज के देश में रहते हैं। यद्यपि हमने गुरु की शरण ली है तो भी हमारा मन हमें डराये रखता है। जब कोई डरने की बात नहीं होती है, तब भी हम डरे रहते हैं। हमारे कोई लाभ की बात होती है, तब भी हम डरे रहते हैं कि ऐसा न हो कि हमारा कोई नुकसान हो जाए। यह डर इसलिये है क्योंकि हमारे अन्दर अपने सतगुरु के प्रति श्रद्धा और विश्वास की कमी होती है। जिनके श्रद्धा–विश्वास द ढ़ होते हैं, उन्हें कोई डर नहीं होता है और सतगुरु उनकी पल–पल रक्षा करते रहते हैं। हुजूर महाराज जी का वचन है कि नाम लेने के बाद भी यदि किसी सत्संगी के दिल के किसी कोने में डर है तो उसमें धोखा है।

शरणागत होकर भी है डर माँह। तो धोखा है शरणागत नाँह।।

सत्संगी सैनिक सुभाष चन्द्र गाँव व डा. किसरैण्टी, जिला रोहतक सतगुरु द्वारा उनकी अपनी पल–पल रक्षा करने की एक घटना का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि–

मैं अरुणाचल प्रदेश में मिलिट्री मेडिकल कोर की अपनी नौकरी में गया हुआ था। दिनाँक २७ जनवरी २००१ को मुझे ईटानगर से हापोली जाना पड़ गया। जब मैं एक ट्रक द्वारा हापोली जा रहा था तो अकस्मात् ही ट्रक का एक टायर पंचर हो गया। अब ट्रक के ड्राइवर और कण्डक्टर टायर बदलने लग गए। मुझे अचानक ख्याल आया कि मैं अब इस ट्रक से तो हापोली देर से ही पहुँच पाऊँगा, क्योंकि टायर बदलने के कार्य में घण्टा, आधा घण्टा लगना स्वाभाविक था। यह सोचकर मैंने दूसरे वाहन से जाने का विचार बना लिया और मैं सड़क के किनारे पर खड़ा हो गया ताकि जो भी वाहन आए, उसको रुकवा कर मैं उसमें बैठ कर

शीघ्रातिशीघ्र हापोली पहुँच जाऊँ। पाँच–सात मिनट बाद में ही मुझे एक टाटा सूमो उस दिशा से आती हुई दिखाई दी। मैंने तत्काल उसे रुकवाने के लिए थोड़ा आगे आना चाहा ताकि मैं उसको हाथ के इशारे से रुकवा सकूँ। परन्तु यह क्या ! मेरे हाथ और पाँव सुन्न हो गए और मैं पत्थर की भान्ति वहीं जड़वत खड़ा रह गया। मैं चकित था कि मेरे साथ यह क्या घटना घट गई! ऐसा तो जीवन में कभी भी नहीं हुआ था। टाटा सूमो मेरे आगे से निकल गई और मेरे हाथ–पाँव की सुन्न भी खत्म हो गई।

अब दस मिनट ही और बीते होंगे, ड्राईवर ने कहा कि ट्रक का टायर बदल दिया गया है। ट्रक में चढ़ जाओ। मैं ट्रक में बैठ गया और ट्रक चल पड़ा। हम पाँच छः कि.मी. चले होंगे, मेरे आश्चर्य का कोई ठिकाना नहीं रहा, जब हमने देखा कि जो टाटा सूमो मेरे आगे से गुजरी थी, वह बुरी तरह से दुर्घटनाग्रस्त हुई पड़ी थी। ड्राईवर ने ट्रक को रोक दिया हमने देखा कि काफी लोग वहाँ इक्कठे हो गए थे। समय के अभाव में हम दुर्घटना का अधिक ब्यौरा नहीं प्राप्त कर सके, क्योंकि हम जल्दी से जल्दी हापोली पहुँचना चाहते थे। परन्तु परिस्थिति को देखते हुए स्पष्ट था कि दुर्घटना बहुत गम्भीर थी। घायल व्यक्ति भी अभी वहीं पर पड़े दर्द से कराह रहे थे। स्थिति ह दय विदारक थी। उस टाटा सूमों के यात्रियों का सामान और खून इधर–उधर बिखरा पड़ा था। अब मुझे समझ में वह बात आई कि मुझे दुर्घटना से बचाने के लिए ही हुजूर ने मेरे हाथ–पाँव और शरीर को सुन्न किया था। मैंने अपने पर्स से सतगुरु का फोटो निकाला और बार–बार उसको अपने माथे से लगाकर शत–शत नमन किया। निस्सन्देह सतगुरु पल–पल हमारी सम्भाल करते हैं।

सैनिक सुभाष चन्द्र
गाँव व डा. किसरैण्टी, जिला रोहतक

नोट :-जिस किसी सत्संगी भाई के साथ इस प्रकार सतगुरु दया की घटना घटी हो तो प्रमाण सहित दिनोद धाम में भाई बलबीर सिंह को दे सकते हैं।